❍ 09 / 01 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *बिना मेहनत रूहानी मौज का अनुभव किया ?*

➢➢ *भगवान के स्टूडेंट होने का नशा रहा ?*

➢➢ *हर कर्म में सफलता का नुभव किया ?*

➢➢ *"मैं पूजनीय आत्मा हूँ" - सदा यह नशा रहा ?*

───────────────────────────

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°
☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆
❂ *तपस्वी जीवन* ❂
✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ *अशरीरी बनने के लिए समेटने की शक्ति बहुत आवश्यक है।* अपने देह-अभिमान के संकल्प को, देह के दुनिया की परिस्थितियों के संकल्प को समेटना है। शरीर और शरीर के सर्व सम्पर्क की वस्तुओं को, अपनी आवश्यकताओं के साधनों की प्राप्ति के संकल्प को भी समेटना है। *घर जाने के संकल्प के सिवाय अन्य किसी संकल्प का विस्तार न हो-बस यही संकल्प हो कि अब अपने घर गया कि गया।* अनुभव करो कि मैं आत्मा इस आकाश तत्व से भी पार उड़ती हुई जा रही हूँ, इसके लिये अब से अकाल तख्तनशीन होने का अभ्यास बढ़ाओ।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं अंधकार में रोशनी करने वाला चैतन्य दीपक हूँ"*

〰✧ अपने को सदा जगे हुए दीपक समझते हो? *आप विश्व के दीपक, अविनाशी दीपक हो जिसका यादगार अभी भी 'दीपमाला' मनाई जाती है। तो यह निश्चय और नशा रहता है कि हम दीपमाला के दीपक हैं? अभी तक आपकी माला कितनी सिमरण करते रहते हैं?* क्यों सिमरण करते हैं? क्योंकि अधंकार को रोशन करने वाले बने हो। स्वयं को ऐसे सदा जगे हुए दीपक अनुभव करो। टिमटिमाने वाले नहीं।

〰✧ *कितने भी तूफान आयें लेकिन सदा एकरस, अखण्ड ज्योति के समान जगे हुए दीपक। ऐसे दीपकों को विश्व भी नमन करती है और बाप भी ऐसे दीपकों के साथ रहते हैं।*

〰✧ टिमटिमाते दीपकों के साथ नही रहते। *बाप जैसे सदा जागती ज्योति है, अखण्ड ज्योति है, अमर ज्योति है, ऐसे बच्चे भी सदा अमरज्योति! अमर ज्योति के रुप में भी आपका यादगार है। चैतन्य में बैठे अपने सभी जड़यादगारों को देख रहे हो। ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें हो।*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

〰✧ संस्कार के ऊपर भी कन्ट्रोल होना चाहिए। जब चाहो, जैसे चाहो - जब यह अभ्यास पक्का होगा तब समझो पास विद ऑनर होंगे। तो *बनना लक्ष्मी-नारायण है, तो राज्य कन्ट्रोल करने के पहले स्व-राज्य अधिकारी तो बनो तब राज्य अधिकारी बनेंगे।*

〰✧ इसका भी साधन यही है कि खजाने जमा करो। समझा। अच्छा - इस वायुमण्डल में, मधुबन में बैठे हो। *मधुबन का वायुमण्डल पॉवरफुल है, इस वायुमण्डल में इस समय मन को कन्ट्रोल कर सकते हो?*

〰✧ चाहे मिनट में करो, चाहे सेकण्ड में करो लेकिन कर सकते हो? *ऑर्डर दो मन को, बस आत्मा परमधाम निवासी बन जाओ।* देखो मन ऑर्डर मानता है या नहीं मानता है? (बापदादा ने ड्रिल कराई) अच्छा।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *फ़रिश्ते अर्थात् इच्छा मात्रम अविद्या।* जैसे देवताओं के लिए गायन है- इच्छा मात्रम् अविद्या। यह है फ़रिश्ता जीवन की विशेषता। देवताई जीवन में तो इच्छा की बात ही नहीं। *ब्राह्मण जीवन सो फ़रिश्ता जीवन बन जाती अर्थात् कर्मातीत स्थिति को प्राप्त हो जाते।* किसी भी शुद्ध कर्म वा व्यर्थ कर्म वा विकर्म वा पिछला कर्म, किसी भी कर्म के बन्धन में बंध कर करना- इसको कर्मातीत अवस्था नहीं कहेंगे। एक है कर्म का सम्बन्ध, एक है बन्धन। तो जैसे यह गायन है- हद की इच्छा से अविद्या, ऐसे फ़रिश्ता जीवन वा ब्राह्मण जीवन अर्थात् 'मुश्किल' शब्द की अविद्या, बोझ से अविद्या, मालूम ही नहीं कि वह क्या होता है! *तो वरदानी आत्मा अर्थात् मुश्किल जीवन से अविद्या का अनुभव करने वाली।* इसको कहा जाता है- वरदानी आत्मा। तो *बाप समान बनना अर्थात् सदा वरदाता से प्राप्त हुए वरदानों से पलना, सदा निश्चिन्त, निश्चित विजय अनुभव करना।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- त्रिदेव रचयिता द्वारा वरदानों की प्राप्ति करना"*

➳ _ ➳ मधुबन पांडव भवन की कुटिया में लवलीन अवस्था में बैठी मैं प्रभु पंसद आत्मा दिलाराम बाबा को मन ही मन दिल के मीठे जज्बात बयां कर रही हूँ... आएं हो मेरी जिंदगी में तुम बहार बनके... आएं हो मेरी जिन्दगी में तुम बहार बनके मेरे दिल में यू ही रहना.... तुम प्यार-प्यार बनके... सब कुछ भूल एक उसके प्यार में खो चुकी हूँ... बस एक बाबा... ऐसे अनुभव हो रहा है जैसे प्यार के सागर बाबा भी मुझ आत्मा पर प्रेम की किरणों की वर्षा कर रहे है... *मुझ आत्मा की चमक ओज तेज बढ़ता जा रहा है... बेहद हल्कापन, गहरी शांति की अनुभूति मैं आत्मा कर रही हूँ...* उस एक के रंग में रंग कर मैं आत्मा उड़ चलती हूँ... फरिश्तों की दुनिया में, अपने दिल के सच्चे सहारे मीठे प्यारे बाबा से मिलन मनाने...

➳ _ ➳ *मीठे प्यारे बाबा सर्व वरदानों से भरपूर करते हुए कहते है :-* "मीठे-मीठे लाडले बच्चे मेरे... संगमयुग पर वरदानों की लाया हूँ तुम्हारे लिए बहार... जिस पर सिर्फ तुम ब्राह्मणों बच्चों का है जन्मसिद्ध अधिकार... सीमित संगम के समय में बच्चे वरदानों की इस बहार को खुद खुदा ले आया है आपके द्वार... सम्पन्न बन जाओ अब इन से... *यही वरदानों की सम्पन्नता खोलेगी स्वर्ग के द्वार... अब लो इस स्लोगन को दिल से स्वीकार... सर्व वरदान है हमारा जन्मसिद्ध अधिकार..."*

❉ *मैं आत्मा सर्व वरदानों से भरपूर होते हुए कहती हूँ :-* "मीठे-मीठे प्यारे-प्यारे बाबा मेरे... दिलों जान से खिल उठी हूँ सुनके आपके ये उदगार... कि खुद खुदा चल कर आ गया मेरे द्वार और दे रहा सर्व वरदानों का मुझे उपहार... खिल उठी हो जैसे मन के आंगन में वरदानों की बहार... *आप के मीठे उदगार से हो रही है मुझे ये अनुभूति कि ये वरदान है मेरा जन्मसिद्ध अधिकार... लिया है इस स्लोगन को दिल में उतार सर्व वरदान है हमारा जन्म सिद्ध अधिकार..."*

➳ _ ➳ *वरदाता बाप वरदानों की रिमझिम वर्षा से भरपूर करते हुए कहते है :-* "मीठे-मीठे फूल बच्चे मेरे... भाग्य विधाता वरदाता बाप ले कर आया कलाहीन युग में भी भाग्य और वरदानों का सर्वश्रेष्ठ शानदार अधिकार... वरदाता बाप स्वयं आ कर रहा है वरदानों से तुम्हारा श्रृंगार... *वरदानों को तुम जीवन में लाओ... वरदानी मूर्त अब तुम बन जाओं... वरदानी मूर्त बन सर्व को वरदानों से सजाओं..."*

❇ *मैं आत्मा सर्व वरदानों से सज-धज कर कहती हूँ :-* "ओ राजदुलारे बाबा मेरे... जन्मते ही दिया है कितना ना सुदंर वरदानों का यह उपहार... *खुद खुदा कह रहा मेरे सारे वरदानों पर है तुम्हारा अधिकार... कर लिया है इस बात को मीठे बाबा मैंने अन्तर मन से स्वीकार...* हूँ मैं कर रही एक-एक वरदान से स्वयं का श्रृंगार... वरदानी मूर्त बन कर रही हूँ... अनेको का उद्धार..."

➳ _ ➳ *मीठे बाबा सर्व वरदानों के रंग मुझमें भरते हुए कहते है :-* "मीठे लाडले बच्चे मेरे... परमधाम से वरदाता बाप ने आकर, आप महान बच्चों को है अपनी आंखों का तारा बनाया... भिन्न-भिन्न वरदानों से है आपके जीवन को सजाया शानदार बनाया... *इन सर्व वरदानों को स्वरूप में लाओ... जन्मसिद्ध अधिकार है ये वरदान इसे स्मृति में रख नशे से भर जाओं... बाप समान मास्टर वरदाता बन सबको वरदानों से सजाओं... सबका कल्याण करते जाओं...*

❇ *मैं आत्मा सर्व वरदानों के रंग में रंग कर कहती हूँ :-* "मीठे प्यारे वरदाता बाबा मेरे... आपकी आंखों का तारा बन सर्व वरदानों से अपनी जीवन को सजा रही हूँ... *एक-एक वरदान का स्वरूप बनती जा रही हूँ... सर्व वरदान है जन्म सिद्ध अधिकार हमारा इस नशे से गा रही हूँ...* दिल से मुस्कुरा रही हूँ... आप समान मास्टर वरदाता बन सबको वरदानों से सजा रही हूँ... सर्व वरदानों से सजे-धजे जीवन से अनेकों का भाग्य बना रही हूँ..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बिना मेहनत रुहानी मौज का अनुभव करना*"

➳ _ ➳ स्वयं भगवान की पालना में पलने वाली मैं ब्राह्मण आत्मा कितनी पदमापदम सौभाग्य शाली हूँ जो मेरा एक - एक सेकेण्ड परमात्म पालना के झूले में झूलते हुए बीतता है। *जिस भगवान के दर्शनों की दुनिया प्यासी है वो भगवान मेरे हर दिन की शुरुआत से लेकर रात के सोने तक मेरे साथ रहता है*। अमृत वेले बड़े प्यार से मीठे बच्चे कहकर मुझे उठाता है। वरदानो से मेरी झोली भरता है। टीचर बन मुझे पढ़ाता है। चलते फिरते उठते बैठते हर कर्म करते मेरा साथी बन मेरे साथ रहता है। *अपनी श्रेष्ठ मत देकर मुझे श्रेष्ठ कर्म करना सिखलाता है। सर्व सम्बन्धो का मुझे सुख देता है*।

➳ _ ➳ ऐसे अपने सर्वश्रेष्ठ संगमयुगी ब्राह्मण जीवन की अनमोल प्राप्तियों की स्मृति में खोई अपने प्यारे प्रभु के प्रेम की लगन में मग्न मैं आत्मा उनसे मिलने के लिए आतुर हो उठती हूँ और *मन मे अपने प्यारे प्रियतम की मीठी सी सुखद याद को समाये, मन बुद्धि के विमान पर सवार होकर उनसे मिलने उनके धाम की ओर चल पड़ती हूँ*। ऐसा लग रहा है जैसे मेरे प्रियतम बाबा मुझे सहज ही अपनी ओर खींच रहें हैं और मैं देह, देह की दुनिया के आकर्षण से मुक्त होकर, बस उनकी ओर खिंचती चली जा रही हूँ।

➳ _ ➳ कुछ ही क्षणों की अद्भुत रूहानी यात्रा को पूरा कर मैं पहुँच जाती हूँ अपने प्यारे शिव पिता के पास। लाइट की एक ऐसी दुनिया जहाँ चारों और चमकती हुई मणियां जगमग कर रही है। इस परमधाम घर में मैं स्वयं को अपने प्यारे प्रभु के सम्मुख देख रही हूँ। *बाबा के साथ अटैच होकर उनसे आ रही लाइट, माइट से मैं स्वयं को भरपूर कर रही हूँ। बाबा से आ रही सर्वशक्तियाँ मुझमे असीम बल भर कर मुझे शक्तिशाली बना रही है*। मैं डबल स्थिति में सहज ही स्थित होती जा रही हूँ। हर बोझ, हर बन्धन से मैं स्वयं को मुक्त अनुभव कर रही हूँ।

➳ _ ➳ अपने प्यारे पिता परमात्मा के सानिध्य में गहन सुख की अनुभूति करके, और उनकी लाइट माइट से भरपूर हो कर डबल लाइट बन कर अब मैं

वापिस लौट रही हूँ। *फिर से साकारी दुनिया मे आकर, अपनी साकारी देह में विराजमान हो कर, अपने प्यारे प्रभु के स्नेह के रस का रसपान करने वाली एकरस आत्मा बन, अब मैं सुबह से लेकर रात तक संगमयुग की मौजों के नजारों का अनुभव करते हुए अपने पिता परमात्मा के स्नेह में सदा समाई रहती हूँ*। मेरे शिव पिता का निस्वार्थ प्रेम देह और देह की दुनिया से मुझे नष्टोमोहा बना रहा है।

➳ _ ➳ अपनी हजारों भुजाओं के साथ बाबा चलते, फिरते, उठते, बैठते हर समय मुझे अपने साथ प्रतीत होते हैं। बाबा के प्रेम का रंग मुझ पर इतना गहरा चढ़ चुका है कि मेरे हर कर्म में बाबा अब सदा मेरे साथ रहते हैं। *अपने पिता परमात्मा के साथ, संगमयुग की मौजों के नजारों का अनुभव मुझे अतीन्द्रीय सुख के झूले सदा झुलाता रहता है। भोजन खाती हूँ तो बाबा के साथ मौज में खाती हूँ। चलती हूँ तो भाग्यविधाता बाप के हाथ मे हाथ देकर चलती हूँ*। ज्ञान अमृत पीती हूँ तो ज्ञानदाता बाप के साथ पीती हूँ। कर्म करती हूँ तो करावनहार बाप के साथ स्वयं को निमित समझ करती हूँ। सोती हूँ तो बाबा की याद की गोदी में सोती हूँ। उठती हूँ तो भी भगवान के साथ रूह - रिहान करके उठती हूँ।

➳ _ ➳ *सारी दिनचर्या में बाबा को साथ रख, खाते, पीते याद की मौज में रहते बेफ़िक्र बादशाह बन अपने निश्चिन्त ब्राहमण जीवन का मैं भरपूर आनन्द ले रही हूँ*।

————————————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं चलन और चेहरे द्वारा पुरुषोत्तम स्थिति का साक्षात्कार कराने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं ब्रहमा बाप समान आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने

का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदा एकरस स्थिति के श्रेष्ठ आसन पर स्थित रहती हूँ ।*
✺ *मैं सच्ची तपस्वी आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं अचल अडोल आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ औरों के सेवा की बहुत-बहुत बहुत-बहुत आवश्यकता है। यह तो कुछ भी नही है, बहुत नाजुक समय आना ही है। ऐसे समय पर *आप उड़ती कला द्वारा फरिशता बन चारों ओर चक्कर लगाते, जिसको शान्ति चाहिए, जिसको खुशी चाहिए, जिसको सन्तुष्टता चाहिए, फरिशते रूप मे साकाश देने का चक्कर लगायेंगे* और वह अनुभव करेंगे। जैसे अभी अनुभव करते है ना, पानी मिल गया बहुत प्यास मिटी। खाना मिल गया, टेन्ट मिल गया, सहारा मिल गया। ऐसे अनुभव करेंगे शांति मिल गई फरिशतों द्वारा। शक्ति मिल गई। खुशी मिल गई। *ऐसे अन्तःवाहक अर्थात् अन्तिम स्थिति, पावरफुल स्थिति आपका अन्तिम वाहन बनेगा। और चारों ओर चक्कर लगाते सबको शक्तियाँ देंगे। साधन देंगे।* अपना रूप सामने आता है । *इमर्ज करो। कितने फरिस्ते चक्कर लगा रहे है! सकाश दे रहे है.* तब कहेंगे जो आप

एक गीत बजाते हो ना - *शक्तियां आ गई... शक्तियों द्वारा ही सर्वशक्तिवान स्वतः ही सिद्ध हो जायेगा। सुना।*

✺ *ड्रिल :- "अपने अन्तः वाहक शरीर द्वारा सेवा का अनुभव"*

➳ _ ➳ देख रही हूँ मैं आत्मा स्वयं को एक बड़ी सी ऊंची पहाड़ी पर प्रकृति के सानिध्य में बैठे हुए... चारों तरफ एक गहन शांति है... कोई आवाज नहीं... *अब मैं आत्मा चलती हूँ अन्तर यात्रा की ओर... समस्त चेतना को भृकुटि के मध्य केन्द्रित करती हूँ...* केवल अपने इस ज्योतिमय स्वरूप को देख रही हूँ *मैं आत्मा, महसूस कर रही हूँ अपने इस प्रकाशमय स्वरूप को बहुत गहराई से...* जितना गहराई से मैं आत्मा अपने इस स्वरूप को अनुभव करती जा रही हूँ उतना ही *मुझ आत्मा की आंतरिक शक्तियाँ जागृत हो रही है... मुझ आत्मा का प्रकाश बढ़ रहा है...* देख रही हूँ मैं आत्मा अपने इस जगमगाते शक्तिशाली स्वरूप को... तभी मुझ आत्मा की मन रूपी स्लेट पर बाबा के द्वारा कहे महावाक्य उभरने लगते है...

➳ _ ➳ *अन्त:वाहक अर्थात अन्तिम स्थिति, पावरफुल स्थिति आपका अन्तिम वाहन बनेगा । इमर्ज करो अपना यह स्वरूप इमर्ज करो* यह शब्द जैसे कानों में गुंजने लगते है... *मैं आत्मा ड्रामा की रिल को फारवर्ड करती हूँ... और अब मैं आत्मा पहुंच चुकी हूँ, ड्रामा के उस अन्तिम चरण में जहाँ चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है... बेहद दर्दनाक सीन सामने आ रहे हैं... आत्माएँ चिल्ला रही है... रो रही है...* दु:खों के पहाड़ उनके जीवन पर गिर पड़े है... *प्रकृति भी अपना विकराल रूप दिखा रही है... चारों तरफ प्रकृति का प्रकोप है... ना कोई साधन कार्य कर रहे है... ना ही विनाशी धन काम आ रहा है...* एक पल की शांति, खुशी की प्यासी आत्माएँ भटक रही है...

➳ _ ➳ उन्हें कहीं से कोई आशा की किरण नजर नहीं आ रही है... *जहाँ-तहाँ आत्माएँ दर्द में चिल्ला रही है... इस दुनिया की अन्तिम सीन बेहद दर्दनाक है...* आत्माएँ तड़फ रही है... उनकी आँखों में दर्द-दु:ख साफ दिखाई दे रहा है... *इसी अन्तिम सीन में मैं आत्मा देख रही हूँ स्वयं को... अपनी बेहद पावरफुल स्टेज को... अपनी इस अन्तिम स्थिति, कर्मातीत स्टेज को... यहाँ रहते भी

साक्षी दृष्टा हर प्रकार से उपराम अवस्था का अनुभव मैं आत्मा कर रही हूँ...* देख रही हूँ मैं आत्मा अपने इस शक्ति स्वरूप को... जिसमें *संहारी और अलंकारी दोनों स्वरूप एक साथ इमर्ज रूप में है... देख रही हूँ अपने इस कम्बाइंड शिवशक्ति स्वरूप को... लाइट माइट सम्पन्न इस स्थिति को... अपनी इस फरिश्ता स्थिति को...* देख रही हूँ मैं आत्मा...

➳ _ ➳ अब मैं फरिश्ता एक सेकंड में अलग-अलग स्थान पर पँहुच कर सभी दु:खी अशांत आत्माओं को सुख-शांति और खुशी की सकाश दे रहा हूँ... *मैं फरिश्ता जिन्हें शांति चाहिए, उन्हें शांति दाता बन शांति दे रहा हूँ... जिन्हें खुशी चाहिए उन्हें खुशी दे रहा हूँ... जिन्हें सुख चाहिए उन्हें सुख की अनुभूति करा रहा हूँ...* मुझ फरिश्ते के साथ बाबा के सभी बच्चे अपने अन्त: वाहक शरीर द्वारा इस पूरे विश्व में जहाँ जिसे जिस चीज की आवश्यकता है उन्हें दे रही है... *हम सभी फरिश्ते मिलकर सुख, शांति की सकाश इस पूरे विश्व को दे रहे है... चारों ओर चक्कर लगा रहे है... सबको सकाश दे रहे है...* आत्माएँ शांति की अनुभूति कर रही है... सुख की अनुभूति कर रही है...

➳ _ ➳ हम फरिश्तों को देखकर बेसहारा आत्माएँ सहारे का अनुभव कर रही है... *हमें देख भक्त आत्माएँ भी अपने ईष्टों का साक्षात्कार कर सन्तुष्ट हो रही है...* जयजयकार कर रही है... और अब यह गायन प्रत्यक्ष हो रहा है... *शिव शक्तियाँ आ गई धरती पर शिव शक्तियाँ आ गई... घर-घर में होती है जिनकी पूजा... चेतन में वो देवियाँ आ गई... हम फरिश्तों से सबको अनेक साक्षात्कार हो रहे है... हम शिव शक्तियों द्वारा सर्वशक्तिवान प्रत्यक्ष हो रहा है...* हाहाकार से जय-जयकार हो रही है... हम एक-एक फरिश्ते द्वारा एक बाबा प्रत्यक्ष हो रहा है... *सभी आत्माएँ अपने सच्चे पिता, अपने प्यारे पिता को पहचान रही है... एक-एक आत्मा के मुख से निकल रहा है मेरा बाबा आ गया मेरा बाबा आ गया...* उन्हें अपने सत्य स्वरूप का साक्षात्कार हमारे द्वारा हो रहा है... उन्हें अब अपने घर का सही रास्ता मिल गया है... अपने सच्चे पिता और अपने असली घर का पता पाकर *सभी आत्माएँ खुश हो रही है... सच्ची शांति, सुख खुशी सच्चे प्यार की अनुभूति कर रही है... ओम शांति...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔